चन्द्रगुप्त नाटक की प्रमुख समस्या या उद्देश्य या अंतर्वस्तु विधान

-वरुण कुमार श्रीवास

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित चंद्रगुप्त नाटक एक ऐतिहासिक नाटक है। भारतीय इतिहास के गौरवशालीयुग(मौर्य युग) की गौरवगाथा है। इस नाटक के माध्यम से हमें तत्कालीन भारतवर्ष की स्थिति ज्ञात होती है। चन्द्रगुप्त नाटक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया भारतीय संस्कृति का परिचय देने वाला नाटक है। चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवन चरित्र से जुड़े विभिन्न प्रसंगों और आचार्य चाणक्य के कुशल राजनीतिज्ञ के रूप को उभारने में पूरी तरह से सक्षम यह नाटक प्रसाद जी के दर्शन मनोविज्ञान, संगीत सौंदर्यबोध और आदर्शवाद को मूर्त रूप देने का प्रयास करता है।

चन्द्रगुप्त नाटक का उद्देश्य - प्रसाद जी ने 'चन्द्रगुप्त' नाटक में मौर्य युग के राजनीतिक और पौराणिक घटनाओं को अपने समय के साथ जोड़ा है और समसामयिक सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक चेतना का प्रतिबिम्ब दिखलाया है,यही उनके नाटक लेखन का मूल उद्देश्य है।

प्रसादजी, अपने युग के अनेक समस्याओं को प्राचीन समय के माध्यम से उजागर करते हैं जो इस प्रकार है-

1. राष्ट्रीयता की समस्या,

2. दार्शनिकता की समस्या,

3. जनमानस में सांस्कृतिक हीनता की समस्या,

4. भारतीय मूल्यों के ह्रास की समस्या

5. भारतीय राज्यों के स्वार्थपरता की समस्या

6. नारी के श्रेय रूप को स्थापित करने की समस्या

प्रसादजी ने नाटक के अंतर्वस्तु में इन समस्याओं अंतर्गुम्फित करते हुए समाधान भी प्रस्तुत किया है जिससे भारतीय युवा हीनभावना का त्याग कर स्वतंत्रता संग्राम में सहर्ष जुड़ सके। भारतीय संस्कृति के पुराने करुणा ,त्याग ,ममता, परोपकार, सौहाद्र आदि) से संस्कारित हो सके-

दार्शनिकता का पाठ - 'चन्द्रगुप्त' नाटक में हमें आद्योपान्त चन्द्रगुप्त और सह पात्रों की भावुकता एवं दार्शनिक प्रवृत्ति के दर्शन होते रहते हैं। चन्द्रगुप्त की कर्तव्यनिष्ठा उसके व्यक्तित्व एवं चरित्र का अविच्छिन्न अंग है। उसकी भावुकता की पुष्टि उसके इस कथन से होती है-

"इस केंद्रच्युत जलते हुए उल्कापिंड की कोई कक्षा नहीं। निर्वासित अपमानित प्राणों की चिंता क्या ?"

प्रसाद जी की दार्शनिक और चिन्तक दृष्टि को सेल्युकस की कन्या कार्नेलिया के कथन से समझ सकते हैं-

"सिकंदर ने भारत से युद्ध किया है और मैंने भारत का अध्ययन किया है। मैं देखती हूं कि यह युद्ध ग्रीक और भारतीयों के ही नहीं, इसमें दो बुद्धियां भी लड़ रही हैं। यह अरस्तू और चाणक्य की चोट है, सिकदर और चंद्रगुप्त तो उनके अस्त्र हैं।"

[illegible]

"परंतु राजकुमारी मेरा हृदय देश की दुर्दशा से व्याकुल है। इस ज्वाला में स्मृति- लता मुरझा गयी है।"

इतिहास की पुनर्व्याख्या - इतिहास और ऐतिहासिक नाटक में अंतर होता है। इतिहासकार अपनी सीमा के भीतर अतीत को नया जीवन देने में नितान्त असमर्थ रहता है। इसके विपरीत ऐतिहासिक नाटककार अपनी प्रतिभा और सजीव कल्पना के सहारे अतीत को पुनर्जीवित करने में समर्थ है। प्रसादजी ने कृतियों के उद्देश्य के सम्बन्ध में स्वयं लिखा है-

"इतिहास का अनुशीलन किसी भी जाति का अपना आदर्श संगठित करने के लिए अत्यन्त लाभदायक होता है। क्योंकि हमारी गिरी दशा को उठाने के लिए हमारी जलवायु के अनुकूल जो हमारी अतीत सभ्यता है, उससे बढ़कर उपयुक्त और कोई भी आदर्श हमारे अनुकूल होगा कि नहीं, इसमें मुझे पूर्ण सन्देह है। मेरी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशित अंश में से उन प्रकाण्ड घटनाओं का दिग्दर्शन कराने की है, जिन्होंने हमारी वर्तमान स्थिति को बनाने का कुछ प्रयत्न किया है।"

'चन्द्रगुप्त' नाटक की कथावस्तु में प्रसाद जी ने ऐतिहासिकता की रक्षा के लिए यथाशक्ति प्रयास किया है। जहां कहीं उन्हें इतिहास की बिखरी सामग्री को एकसूत्र में पिरोने की आवश्यकता पड़ी है अथवा रसानुभूति की तीव्रता हेतु अवसर आया है, उन्होंने निःसंकोच कल्पना का सहारा लिया है। किंतु उनकी कल्पना से इतिहास का किंचित अनर्थ नहीं हुआ है। कल्पना ने इतिहास के निर्जीव शरीर में प्राण ही फूंके हैं उसके स्वरूप को विकृत नहीं किया है, अतः इस नाटक में पात्रों, घटनाओं और स्थानों की ऐतिहासिकता की पर्याप्त रक्षा हुई है।

प्रसाद जी ने 'चन्द्रगुप्त' में मौर्य वंश, पिप्पली कानन, चन्द्रगुप्त का बाल्य जीवन, सिकंदर, मगध, चन्द्रगुप्त की विजय, शासन व्यवस्था और चाणक्य आदि के इतिहास को देश काल की कसौटी पर कसने का पूर्ण प्रयास भूमिका में किया है। साथ ही नाटक की कथावस्तु भी अधिकाधिक ऐतिहासिक पात्रों एवं घटनाओं को ध्यान में रखकर निर्मित की गयी है।

संघर्ष के माध्यम से राष्ट्रीयता का उद्घोष - फिरंगियों के मदमत्त व्यवहार से भारतीय जनता त्रस्त थी। पात्रों के आंतरिक और बाह्य संघर्ष में यह बात अधिक प्रभाव से प्रकट होती है। सिकंदर का आक्रमण विदेशी एवं भारतीय संस्कृति के मध्य टकराव को बताता है। अंग्रेजी संस्कृति और भारतीय संस्कृति के टकराव को भी संदर्भ में समझा जा सकता है। अधिकांश पात्रों में अन्तर्संघर्ष का कारण देश प्रेम, कर्तव्य-निष्ठा रहा है।

प्रसाद की राष्ट्रीयता की भावना का परिचय नायक चन्द्रगुप्त के इस कथन "धन्यवाद ! भारतीय कृतघ्न नहीं होते" से ही मिल जाता है। देश प्रेम से आबद्ध 'चन्द्रगुप्त' भारतीय गौरव का निरन्तर गान करता है। पर्वतेश्वर सदृश वीर का यह आह्वान प्रसाद की संवेदनशीलता का उत्कृष्ट नमूना है-

"सेनापति ! देखो उन कायरों को रोको उनसे कह दो कि आज रणभूमि में पर्वतेश्वर पर्वत के समान अचल है। जय-पराजय की चिंता नहीं। इन्हें बता देना होगा कि भारतीय लड़ना जानते हैं। बादलों से पानी की जगह बज्र बरसे, सारी गजसेना छिन्न-भिन्न हो जाय, परंतु एक पग भी पीछे हटना पर्वतेश्वर के लिए असंभव है। उन भगोड़ों से एक बार जननी के स्तन्य की लज्जा के नाम पर रुकने के लिये कहो। कहो कि मरने का क्षण एक ही है।"